



UNIVERSITY NEWS 15 OCTOBER 2025

AMAR UJALA PAGE NO 14

TOI SPECIAL EDITION

कैनवास पेंटिंग के संरक्षण के बताए गुर

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के कलेज ऑफ आर्ट्स एंड क्रॉफ्ट्स के हल्दर हॉल में मंगलवार को कैनवास पेंटिंग्स के संरक्षण पर कार्यशाला हुई। सत्र में इनटैक के निदेशक भर्मेन्द्र मिश्रा के साथ सौरव कर्मिकर और आलोक कुमार की ओर से पेंटिंग्स की देखभाल, प्रकाश और तापमान के प्रभाव, सही पेंटिंग और कट निबंधन के उपायों पर चर्चा हुई। कार्यक्रम भारतीय राष्ट्रीय कला एवं सांस्कृतिक भरोहर ट्रस्ट (इन्टेक) के सहयोग से हुआ। कार्यशाला में भर्मेन्द्र मिश्रा ने पेंटिंग्स में इस्तेमाल होने वाले जैविक व अजैविक पदार्थों, मैटीरियल साइंस, तापमान, प्रकाश और आर्द्रता के प्रभावों पर विस्तार से जानकारी दी। साथ ही छात्रों को लक्स मीटर, यूवी मीटर, स्पुमिडिटी मीटर जैसे उपकरणों के इस्तेमाल के विषय में भी बताया। (माई सिटी रिपोर्टर)

DAINIK JAGRAN PAGE NO 36

आनलाइन कोर्सों के विद्यार्थियों का इंडक्शन प्रोग्राम 17 को

जासं • लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय में संचालित आनलाइन आठ पाठ्यक्रमों में इस बार करीब 170 विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया है। लवि सेंटर फार आनलाइन एंड डिस्टेंस एजुकेशन के निदेशक प्रोफेसर पियूष भार्गव ने बताया कि जिन विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया है, उनके अभिलेख सत्यापन की प्रक्रिया चल रही है। 15 अक्टूबर तक इनकी सूची यूजीसी की



वेबसाइट पर अपलोड की जाएगी। 17 अक्टूबर को दोपहर एक बजे आनलाइन माध्यम से इन विद्यार्थियों का इंडक्शन प्रोग्राम होगा। इसका लिंक उनके मोबाइल पर शेयर किया जाएगा।

लवि व कालेजों में 20 से दीपावली की छुट्टी

जासं • लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय ने दीपावली का अवकाश घोषित कर दिया है। विश्वविद्यालय एवं सहयुक्त कालेजों में 20 से 23 अक्टूबर तक दीपावली की छुट्टी रहेगी। इस संबंध में पत्र जारी कर दिया गया है।

I NEXT PAGE NO 2

एलयू व कालेजों में 20 से दीपावली की छुट्टी

LUCKNOW: लखनऊ विश्वविद्यालय ने दीपावली का अवकाश घोषित कर दिया है। विश्वविद्यालय एवं सहयुक्त कालेजों में 20 से 23 अक्टूबर तक दीपावली की छुट्टी रहेगी। इस संबंध में पत्र जारी कर दिया गया है।

AMRIT VICHAR PAGE NO 8

लविवि में एप्लाइड डेटा साइंस व मशीन लर्निंग पर कार्यशाला

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार: लखनऊ विश्वविद्यालय के अभियांत्रिकी एवं तकनीकी संस्था के अंतर्गत कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग विभाग में एक दिवसीय 'एप्लाइड डेटा साइंस एंड मशीन लर्निंग' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को संचालित करते

रिबूट करते रहना जरूरी है। विभाग के समन्वयक डॉ. जीशान अली सिद्दीकी ने बताया कि विद्यार्थियों को नवीनतम तकनीकों का व्यावहारिक अनुभव देने के लिए विभाग लगातार सेमिनार, विशेषज्ञ व्याख्यान और कार्यशालाओं का आयोजन करता है। कार्यशाला में बी.टेक., बी.सीए और एम.सीए के 150 से अधिक विद्यार्थियों ने सहभागिता की।

AMRIT VICHAR PAGE NO 3

कला एवं शिल्प महाविद्यालय में विद्यार्थियों के लिए आयोजित किया गया कार्यक्रम

पेंटिंग को सुरक्षित रखने की वैज्ञानिक कला बताई



कार्यशाला संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार: इंटैक के कलेज ऑफ आर्ट्स एंड क्रॉफ्ट्स के हल्दर हॉल में मंगलवार को कैनवास पेंटिंग्स के संरक्षण पर कार्यशाला हुई। सत्र में इनटैक के निदेशक भर्मेन्द्र मिश्रा के साथ सौरव कर्मिकर और आलोक कुमार की ओर से पेंटिंग्स की देखभाल, प्रकाश और तापमान के प्रभाव, सही पेंटिंग और कट निबंधन के उपायों पर चर्चा हुई। कार्यक्रम भारतीय राष्ट्रीय कला एवं सांस्कृतिक भरोहर ट्रस्ट (इन्टेक) के सहयोग से हुआ। कार्यशाला में भर्मेन्द्र मिश्रा ने पेंटिंग्स में इस्तेमाल होने वाले जैविक व अजैविक पदार्थों, मैटीरियल साइंस, तापमान, प्रकाश और आर्द्रता के प्रभावों पर विस्तार से जानकारी दी। साथ ही छात्रों को लक्स मीटर, यूवी मीटर, स्पुमिडिटी मीटर जैसे उपकरणों के इस्तेमाल के विषय में भी बताया। (माई सिटी रिपोर्टर)

VOICE OF LUCKNOW PAGE NO 5 I NEXT PAGE NO 2

पेंटिंग्स के संरक्षण की बारीकियों पर हुई विस्तृत चर्चा

अमृत विचार (vol)

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के कलेज ऑफ आर्ट्स एंड क्रॉफ्ट्स के हल्दर हॉल में मंगलवार को कैनवास पेंटिंग्स के संरक्षण पर कार्यशाला हुई। सत्र में इनटैक के निदेशक भर्मेन्द्र मिश्रा के साथ सौरव कर्मिकर और आलोक कुमार की ओर से पेंटिंग्स की देखभाल, प्रकाश और तापमान के प्रभाव, सही पेंटिंग और कट निबंधन के उपायों पर चर्चा हुई। कार्यक्रम भारतीय राष्ट्रीय कला एवं सांस्कृतिक भरोहर ट्रस्ट (इन्टेक) के सहयोग से हुआ। कार्यशाला में भर्मेन्द्र मिश्रा ने पेंटिंग्स में इस्तेमाल होने वाले जैविक व अजैविक पदार्थों, मैटीरियल साइंस, तापमान, प्रकाश और आर्द्रता के प्रभावों पर विस्तार से जानकारी दी। साथ ही छात्रों को लक्स मीटर, यूवी मीटर, स्पुमिडिटी मीटर जैसे उपकरणों के इस्तेमाल के विषय में भी बताया। (माई सिटी रिपोर्टर)

कार्यशाला संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार: इंटैक के कलेज ऑफ आर्ट्स एंड क्रॉफ्ट्स के हल्दर हॉल में मंगलवार को कैनवास पेंटिंग्स के संरक्षण पर कार्यशाला हुई। सत्र में इनटैक के निदेशक भर्मेन्द्र मिश्रा के साथ सौरव कर्मिकर और आलोक कुमार की ओर से पेंटिंग्स की देखभाल, प्रकाश और तापमान के प्रभाव, सही पेंटिंग और कट निबंधन के उपायों पर चर्चा हुई। कार्यक्रम भारतीय राष्ट्रीय कला एवं सांस्कृतिक भरोहर ट्रस्ट (इन्टेक) के सहयोग से हुआ। कार्यशाला में भर्मेन्द्र मिश्रा ने पेंटिंग्स में इस्तेमाल होने वाले जैविक व अजैविक पदार्थों, मैटीरियल साइंस, तापमान, प्रकाश और आर्द्रता के प्रभावों पर विस्तार से जानकारी दी। साथ ही छात्रों को लक्स मीटर, यूवी मीटर, स्पुमिडिटी मीटर जैसे उपकरणों के इस्तेमाल के विषय में भी बताया। (माई सिटी रिपोर्टर)

AMRIT VICHAR PAGE NO 8

20 से 23 तक लविवि में अवकाश घोषित

अमृत विचार, लखनऊ: लखनऊ विश्वविद्यालय एवं संबद्ध महाविद्यालयों में दीपावली पर्व के उपलक्ष्य में 20 अक्टूबर से 23 अक्टूबर तक अवकाश घोषित किया गया है। विश्वविद्यालय में 24 अक्टूबर से नियमित कार्य व कक्षाएं शुरू होगी।

आनलाइन कोर्सों के विद्यार्थियों का

इंडक्शन 17 को

LUCKNOW (14 Oct): लखनऊ विश्वविद्यालय में संचालित आनलाइन आठ पाठ्यक्रमों में इस बार करीब 170 विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया है। लवि सेंटर फार आनलाइन एंड डिस्टेंस एजुकेशन के निदेशक प्रोफेसर पियूष भार्गव ने बताया कि जिन विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया है, उनके अभिलेख सत्यापन की प्रक्रिया चल रही है। 15 अक्टूबर तक इनकी सूची यूजीसी की वेबसाइट पर अपलोड की जाएगी। 17 अक्टूबर को दोपहर एक बजे आनलाइन माध्यम से इन विद्यार्थियों का इंडक्शन प्रोग्राम होगा। इसका लिंक उनके मोबाइल पर शेयर किया जाएगा। 20 अक्टूबर तक इन सभी को लॉगिन आइडी व पासवर्ड दे दिया जाएगा ताकि वह पढ़ाई कर सकें।



WHY LU SHOULD BE GIVEN HERITAGE UNIVERSITY TAG

From pioneering academic disciplines to nurturing generations of leaders across politics, literature, arts, law, and science — LU's contribution is immense. Heritage University status would not only honour its historic past but also secure resources and recognition necessary to preserve its legacy, writes Anjanaya Singh

A n institution that has shaped education, culture, and leadership in India for over a century and now with an A++ NAAC grade in tow, its students and alumni firmly believe that the Lucknow University must get a bigger recognition. And as two universities in the same city can't be converted into a central university the best option for LU could be the tag of a Heritage University.

Its supporters argue that LU's contribution to the nation is unmatched, ranging from pioneering academic disciplines to nurturing generations of leaders across politics, literature, arts, law, and science. Heritage University status would not only honour its historic past but also secure the resources and recognition necessary to preserve its cultural, intellectual, and architectural legacy for future generations.

LU is the only state university in Uttar Pradesh, holding a unique position in the higher education framework of the state. While Allahabad University once a state institution, was granted Central University status in 2005, receiving funds from the Government of India, LU continues to function under the jurisdiction and funding of the state govt.

Established in 1921, LU was conceived as a teaching and residential institution. Its foundation laid through a combination of visionary ideas and public support. Raja Sir Muhammad Ali Muhammad Khan of Mahmudabad first proposed the idea, while LU Governor Sir Harcourt Butler brought it to life with the help of educationists and local leaders. The university was funded through generous donations from nobility and citizens, making it one of India's earliest crowd-supported universities. A symbol of community aspiration and national pride.

When LU was established in 1921, Canning College became one of its core pillars, marking a new era in structured higher education.

Canning College was not just an educational institution; it was a movement towards intellectual self-reliance. It symbolized Lucknow's progressive spirit, laying the foundation for a university that would eventually shape the educational map of North India," says Prof. Nishi Pandey, professor emerita and professor of eminence, Department of English and Modern European Languages, Lucknow University.

When LU was established in 1921, Canning College became one of its core pillars, marking a new era in structured higher education.

Bhimain, a pioneer of Indian animation and cinema, Sukumar Bose, known for evocative artistry, Juhl Chattervedi, acclaimed screenwriter of Piku, Iftekhar, a veteran actor of classic Hindi cinema, Surendra Pal Joshi, renowned for paintings, sculptures, and murals; Ragini Upadhyaya, a noted Nepali artist; Lalit Mohan Sen, and Sanjay Kumar Chatterjee, stalwarts of the Indian art scene.

"The spirit of Lucknow University flows through many great institutions that were once part of its academic family. It has truly been the cradle of higher education in North India," says LU spokesperson Prof. Mukul Srivastava.

The Oriental Studies: Preserving Civilizational Roots

Among LU's oldest academic branches are its Oriental Studies departments, the custodians of India's linguistic and cultural heritage.

The Department of Oriental Studies in Arabic and Persian was first established in 1864 at Canning College and later integrated into LU in 1922. It offers undergraduate and certificate courses in classical languages, continuing the legacy of Indo-Islamic scholarship. Notably, the department charges no tuition fees, a tradition reflecting LU's commitment to accessible education.

Similarly, the Department of Oriental Studies in Sanskrit was founded in 1864 as the Board of Oriental Studies and gained independent departmental status in 1990. It aims to preserve Indian cultural and philosophical traditions through classical Sanskrit.

"LU's linguistic diversity is a reflection of India's composite culture. From Arabic and Persian to Sanskrit, French, Chinese, and Russian, these languages are not just subjects; they are bridges between civilizations, sustaining our shared heritage," Prof. Pandey says.

LU's curriculum embraces Indian languages like Hindi, Urdu, Sanskrit, Tamil, and Awadhi, as well as Modern European Languages such as French, German, and Russian, making the university a true melting pot of global intellectual traditions.

The Mother of Several Universities

LU has not only shaped countless minds but has also served as the seedbed from which several prominent institutions have grown, earning it the title of 'The Mother of Several Universities.'

LU's academic and institutional influence extends far beyond its own campus. King George's Medical College, which once functioned as the faculty of medicine under LU, later evolved into an independent medical university, now one of India's foremost centres for medical education and research. LU's College of Architecture and Planning and the Institute of Engineering and Technology (IET) formed the foundation for technical and engineering education in the state, contributing to the establishment of Dr. APJ Abdul Kalam Technical University (AKTU), which today oversees a vast network of technical institutions across UP. Among LU's oldest and most distinguished institutions is the College of Arts and Crafts, established in 1911, even before the university itself. Over the decades, it has produced generations of celebrated artists and filmmakers who have left indelible marks on India's cultural canvas. Its distinguished alumni include

iconic editor Vinod Mehta...the list goes on.

Other illustrious alumni include writers Attia Hosain and Qurat-ulain Haider; poets Kumar Santh and Raghubir Sahai; theatre pioneer Raj Bisaria; cricketers Suresh Raina and RP Singh; and leaders in student politics such as Brajesh Pathak, Arvind Singh Gope, Pushkar Singh Dhami, and Harish Rawat.

"The achievements of LU alumni reflect the institution's deep-rooted culture of excellence, shaping India's political, scientific, and cultural fabric. Their success is a living testament to LU's enduring legacy of leadership and learning," said LU vice-chancellor Manu Khanna.

Academic Powerhouses

From the beginning, LU encompassed both intellectual depth and disciplinary diversity. Departments like anthropology, sociology, geology, and political science became nationally and internationally renowned.

The departments of anthropology and sociology, led by pioneering thinkers like Prof. DN Majumdar and Prof. Radhakamal Mukerjee, placed LU at the forefront of social science research globally. Similarly, Prof. Birbal Sahni transformed the department of geology into a hub of paleobotanical research, laying the groundwork for India's scientific exploration of prehistoric life.

The department of political science, established in 1922, holds the distinction of being one of the first independent political science departments in the country, playing a vital role in shaping India's academic and political discourse. "Our departments in sociology, anthropology, geology, and political science have defined academic excellence in India, their research has influenced generations of scholars worldwide," said LU spokesperson Mukul Srivastava.

Why Heritage University Status?

There is no provision for having two central universities in the same city, and with Baba Saheb Bhimrao Ambedkar University (BBAU) already serving as Lucknow's Central University, the most viable and deserving recognition for LU is the Heritage University status. As LU proudly celebrates over a century of academic excellence, its unparalleled contributions to Indian education, research, and social transformation call for national acknowledgment. The university has been the nurturing ground for numerous institutions, pioneered many academic disciplines, and produced generations of leaders, scholars, and reformers who have shaped India's intellectual and cultural destiny.

"Baba Saheb Bhimrao Ambedkar University (BBAU) is already a Central University, and as the premier university of the state capital, LU cannot be granted Central status. However, Heritage University status would not just honor its glorious past, it would safeguard its future. This recognition would allow us to preserve LU's historic infrastructure, build a dedicated museum to showcase our rare manuscripts, and strengthen the Tagore Library's efforts to conserve and protect invaluable collections for generations to come," said Prof. Nishi Pandey.

However, despite its monumental legacy, LU continues to grapple with challenges in allocation of funds, infrastructure, conservation, and resource mobilization. Granting it Heritage University status would not only honor its illustrious past but also empower it to preserve its architectural grandeur, academic integrity, and cultural heritage for the future.

A National Treasure

LU is a living embodiment of India's intellectual and cultural history. From its crowd-funded beginnings to its global academic influence, from its Navrasna professors to its alumni who shaped the nation's politics, law, science, literature and arts, LU represents the essence of India's journey towards modernity.

"Secularism, cultural harmony and brotherhood are the pillars of Lucknow University. We strive to nurture these values through education, dialogue, and inclusive scholarship," said Prof. Nishi Pandey.

Conferring Heritage University status would honor its illustrious past and ensure that its future continues to inspire generations. In the heart of Lucknow, LU stands as a beacon where history meets scholarship, and tradition inspires progress.

THE 9 GEMS

Since the inception of its extraordinary academic journey, LU has been blessed with members of international standing. Its members of faculty have been the brain behind reputable research cradles and were among the first Indians to be conferred foreign degrees. Here are the Navratna (nine gems) to whom LU owes its excellence.

BIRBAL SAHNI

An eminent scientist from Cambridge, England, Sahni took charge of the botany department as its first professor at the age of 30 in 1921. He was instrumental in the birth of the geology department in 1942. Four years later, he gifted India its first paleobotanical research institute — Birbal Sahni Institute of Paleobotany (LSI) — the foundation stone of which was laid by Jawaharlal Nehru. The University of Cambridge recognised his research by conferring on him a Doctorate of Science in 1929. He taught at LU till his death in 1949.

RADHAKAMAL MUKERJEE

Recipient of India's third highest civilian honour, Padma Bhushan (1962), social scientist Radhakamal was associated with several economic commissions of the country. The professor of sociology was vice-chancellor of LU from 1955 to 1958. He is among five Indian thinkers — including B.R. Ambedkar and Mahatma Gandhi — whom UGC-NET 2019 candidates study.

RADHA KUMUD MUKHERJEE

A renowned historian, Radha Kumud taught in Benares and Mysore before joining LU in 1921. Before retiring in 1944, he raised over Rs 50,000 for history scholarships. Later, he became a Rajya Sabha member and received the Padma Bhushan in 1957.

KA SUBRAMANIAM IYER

One of the first students of St. Xavier's College, Palayamkottai (1917), Iyer studied Sanskrit and Pali, later training under French Indologist Sylvain Levi. After earning his master's degree, he founded LU's Department of Sanskrit and Prakrit Languages, introducing courses in Vedic literature and even teaching French part-time.

NIRMAL KUMAR SIDHANTA

A Cambridge scholar, Sidhanta joined LU in 1921 as a reader and became professor within five years — the first Indian to head the department of English and Modern European Languages. Known for his literary brilliance and association with Tagore, he later served as secretary of the Radhakrishnan Commission and vice-chancellor of both Calcutta and Delhi universities.

WALI MOHAMMAD

Specialising in spectroscopy, magneto-optics, and wireless operations, Wali Mohammad became the first head of LU's Physics Department in 1921. His pioneering research on the hyperfine structure of spectral lines used a Littrow mounting spectrograph, a rare acquisition then. He later presided over the All India Library Association and the Physics and Mathematics section of the Indian Science Congress.

KN BAHL

A distinguished zoologist, Prof. KN Bahl was among the earliest Indian biologists to introduce modern research methods in animal physiology and cytology. As head of LU's zoology department, he mentored generations of scientists and later became the vice-chancellor of Delhi University, contributing immensely to biological sciences in India.

RU SINGH

The founding professor of the faculty of law at LU, Prof. RU Singh was a pioneer in legal education in India. He shaped the curriculum to align with modern jurisprudence while preserving classical legal thought. His visionary approach helped LU emerge as one of the leading law schools in the country.

MASOOD HASAN RIZVI

An eminent Persian scholar and historian of Indo-Islamic culture, Prof. Masood Hasan Rizvi's works on Urdu and Persian literature are widely acclaimed. Recipient of the Sahitya Akademi Award (1960) and Padma Shri (1970), he led LU's Department of Persian and Oriental Studies and played a vital role in promoting India's syncretic literary heritage.

